संस्कृत, हिन्दी और पहाड़ी भाषा में भगवती का बृहद् पूजन

लेखक

शमी शर्मा



प्रकाशक

पोथी घर प्रकाशन

सेराथाना (कांगड़ा)—176056

हिमाचल प्रदेश

भगवती का वृहद् पूजन

(संस्कृत, हिन्दी और पहाड़ी भाषा में)

लेखक
शामी शर्मा

श्रीमती तुलसी देवी पुस्तक माला
प्रथम पुष्प

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियां

वसंत पंचमी संवत् 2052

प्रकाशक :
पोथी घर प्रकाशन
सेरा थाना (कांगड़ा)–176 056
हिमाचल प्रदेश

मुद्रक :
इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रैस, धर्मशाला
फोन : 22390

समर्पण

अपने पितामाह सोमदत्त राधा राम जी
की स्मृति में उन के पौत्र श्री जितेन्द्र कुमार
तथा पौत्र वधू श्रीमती अनु बाला
ने भगवती पूजन जनता के प्रचारार्थ
प्रकाशित किया।

सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणी नमोस्तुते।

निवेदक :
जितेन्द्र कुमार
अणु बाला

भगवती का वृहद् पूजन

हिन्दी और पहाड़ी भाषा में भगवती का वृहद् पूजन पौराणिक संस्कृत श्लोकों का हिन्दी पहाडी अनुवाद पद्यवद्ध प्रस्तुत किया जा रहा है। पूजन से पूर्व सामग्री एकत्रित कर अपने पास रख लें। भगवती के वृहद् पूजन का अनुष्ठान इस पुस्तिका की सहायता से आप घर बैठे कर सकते हैं। इसके करने से आप की अभीष्ट मनोकामना, कार्य सफलता, रोग निवृत्ति, स्वस्थ्य लाभ, धन सम्पत्ति, सुख लाभ जो भी आप चाहें, मिल सकता है।

भगवती के वृहद् पूजन के (42) बतालिस उपशीर्षक आते हैं। रेत या मिट्टी में जौं बीज कर मध्य में घट स्थापन किया जाता है। यह कलश मिट्टी पीतल की गड़बी आदि के रुप में लिया जा सकता है। उस पर थाली रखें। उस पर दुर्गा यन्त्र कुंकुम से मध्य में लिख धातु की प्रतिमा, अथवा सुपारी, नारियल स्थापित कर पूजन करें।

यदि ऐसा न हो सके तो लकड़ी के पटड़े, फलक पर दुर्गा का चित्र रख कर दुर्गा यन्त्र रच सकते हैं। सुपारी पर भी पूजन कर सकते हैं। पूजन अनुष्ठान रूप में नियमित होना चाहिए।

सामग्री

संकल्प पात्र, जल, आचमनी, अर्घ्य पात्र अर्धा आचमनी, गंगाजल, चन्दन, कुंकुम, अक्षत, दूध, दही, घृत, मधु, खाण्ड, वस्त्र, आभूषण, अभाव में दक्षिणा, हल्दी, सिंदूर, कज्जल, सौभाग्य सूत्र, माताजी की धातु प्रतिमा, सोने की प्रतिमा, दुर्गा चित्र, पटड़ा, दुर्गा यन्त्र, थाली, गड़बी या कलश, डोरी, इतर, हल्दी, फूल, पुष्प माला, धूप, दीप, ज्योति, मेवा, नैवेद्या, ऋतुफल, अखंडफल, गरी गोला, ताम्बूल, पान, लोंग, इलायची दक्षिणा, कपूर आरती, पुष्पांजलि, शय्या प्रदक्षिणा, क्षमा प्रार्थना।

– शमी शर्मा

आसन

अमूल्य रत्नां ने बणया, चित्तरां ने शांभायमान
आनन्दे सुखे देणे आला, सिहांसन बण्या है महान्

अनेक रत्न संयुक्तं नाना मणि गणान्वितम्
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्

अमुल्य रत्नों से निर्मित, चित्रों से शोभायमान
आनन्द सुख देने वाला, सिंहासन तेरा है महान्

पाद्य समपर्ण

जल देवें

हे मां ! दुर्गा भगवती, जल करन्यो स्वीकार
पैरां धोणे जो जल लेईने, कृपा करनी तुसां अपार

गंगादि सर्वती र्प्येभ्य आनीतं तोय मुत्तमम्
पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि

हे मां ! दुर्गा भगवती, जल करो स्वीकार
पैर धोने को जल लेकर, कृपा करो अपार

अर्ध्य समर्पण

अर्ध्य दें

जल दूर्वा कनें फल्ल अछत लेई, अर्ध तुसां जो मैं दिंदा
सौणे बर्तणे च है रक्खेया, तुसां अग्गे अर्पित करदा

गन्ध पुष्पाक्षर्ते युक्तमर्ध्यं सम्पादितं मया
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्नताभव सर्वदा

जल दूर्वा पुष्पाक्षतले, अर्ध्य करता हूं अर्पित
सुन्दर पात्र में रखा, करता हूं तुम्हें समर्पित

आचमन

आचमन दें

कपूरे रिया वासी बणाया, आचमन है जल ठण्डा ठण्डा
अपर्ण करां तुसां जो माता, ग्रहण करना हे चामुण्डा !

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्
तोयमाचनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि

कर्पूर आदि से है सुवासित, आचमन है जल शीतल
अर्पण करता हूं माता, ग्रहण करो तुम देता जल

स्नान

पवित्र कपड़े ने छाणया, जल गंगा दा लेई आया
स्नान करना अम्मा इसने, तू कल्याण कारिणी महामाया

मन्दा किन्यस्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्
तदिदं कल्पित देवि। स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

आंवले से सुगन्धित द्रव्य, दर्लभ परम है सुपक्व
स्वीकार करो मां जगदम्बे ! चिकना द्रव्य यह परिपक्व

पृथक् पंचामृत स्नान

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्

दूधेरा स्नान

गौ माता दे बछड़े जो, तृप्त करी ने लेई आया
तुसां रिया तृप्तियां ही ताईं, ताकत भरे तुसां री काया

फिरी पाणी देणा

दूध स्नान

गौ दधिजमा करके, प्रसन्नचित्त स्वीकार करो
स्नान हेतु अपर्णन करता, मां मेरा कल्याण करो
फिर जल देवें

दधि स्नान

गाई रादूध जमाई करी कें, खुशिया ने मंजूर करना
न्हौंणें तांईं अर्पण करदा अम्मा तुसां कल्याण करना

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराल्मं शशिप्रभम्
दध्यानीतं मयादेवी ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

गौदधिजमा करके, प्रसन्न चित्त स्वीकार करो
स्नान हेतु अर्पण करता है, हे मां मेरा कल्याण करो
फिर जल देवें

घृत स्नान

छोली़ छोली़ घ्यो बणाया, बद्धिया कूला तन बणाए
समर्पण तुसां जो है मां, तगड़ा मगड़ा खरा बणाए

नवनीतं समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

आलोड़न किया घी उत्तम घृत, मां स्नान स्निग्धता प्रदान करे
स्नानार्पण है हे मां ! यह तुम को पुष्टि प्रदान करे।
फिर जल देवें।

मधु स्नान

फुल्लां रिया, धूड़ी ते झरदा, दरोलें माखियां है कठेरेया
शुद्ध बर्तने (पात्रां) च है रक्खया, सेह मखीर मां तुसां चढ़ाया

पुष्परेण समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्
घृतं तुम्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

पुष्प परागों से झरता, मधुमक्खियों द्वारा है सिंचित
पवित्र पात्र में रख कर, करता तुम को अभिसिंचित

फिर जल देवें

शर्करा स्नान

शान्ति सुख कने बले बधाए, गान्ने पीड़ी है कड्डियो
श्रद्धा ने मैं तुसां जो चढ़ां, खंड तुसां रे अंगे चढियो

इक्षु सार समुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभम्
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

सुख शान्ति वलवर्द्धक है, गन्ने के रस से है निकली
अर्पण करता श्रद्धा से, स्नान करो मां है विनती

फिर जल देवें

पंचामृत स्नान

गौ माता रा दूध लई, दूध घ्यो शहद खंड घोली
पंचामृते ने स्नान करा मां ! ताकतवर वण मां ! तोली

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्
पंचामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

ले गो माता का दुग्ध दधि घृत मधु शर्करा .
पंचामृत ले स्नान करो मां, बन जाओ तुम सवला

शुद्ध स्नान

बराबर ठंडा तत्ता पाणी, खरे बर्तणे च है रक्खया
स्नान करा जगदंबाराणी, गंगाजले सांई बणया

शुद्धंयत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम्
समर्पितम् मया भक्तया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्

समशीतोष्ण शुद्धजल, सुन्दर वर्तन में रखा है
स्नान करो मां इससे, गंगाजल सा अच्छा है

मधु पर्क

दुध घ्यो कनें शहद मलाया, मधुपर्क इस तुसां संभाला
नोखे पात्रे मंझ रक्खया, वर देणा कल्याणे बाला

दधि घृत समायुक्तं मधुशर्कर यान्वितम्
मधुपर्कं मयानीतं गृहाण परमेश्वरि

दधि घृत मधु से है मिश्रित मधुपर्क मां स्वीकार करो
दिव्य पात्र में रखा अर्पित, वरदायिनी कल्याण करो

यज्ञोपवीत

नोंईयां तंदां ने बणाया, गायत्री मंत्रे ने बट्टया
बल तेज बधाणे आला, यज्ञोपवीत तुसां जो रक्खया

नवभिस्तन्तु भिर्युक्तं त्रिगुणं देवतायपम्
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि

नव तंतुओं से निर्मित, सविता मंत्र से संस्कृत
वल तेजबढ़ाने.वाला, यज्ञोपवीत है अर्पित

वस्त्र उपवस्त्र

शुद्ध सूतरे ने बणयो, हन सुन्दर वस्त्र मन मोहक
शरीरेरी रच्छया करने ताईं, वस्त्र हन एह अन जोड़क

दिव्यांवरं नूतनं हिक्षौमं त्वति मनोहरम्
दीयमानं मया देवि ! गृहाण जगदम्बिके
कंचुकीसुपवस्त्रं च नानार त्नैः समन्वितम् गृहाणत्वं मया दत्तं मंगले जगदीश्वरी

शुद्ध पवित्र सूत्रों द्वारा, यह वस्त्र सुन्दर मन मोहक
शरीर की रक्षा करने, वस्त्र उपवस्त्र तुम्हें अर्पित

गन्ध–चन्दन

सुहागे ने है एह भरया,, मां तुसां लेई लैणा
बद्धिया टिक्का चन्नणेरा, मत्थें अपणें लाई लैणा

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्
विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।

सौभाग्य से है परिपूर्ण, गन्ध मां स्वीकार करें
उत्तम गन्ध से शोभायमान, माथे पर धारण करें

कुंकुंम

छैल छवीलियां जो बद्धिया, चमक है एह देणे आला
कुंगू तुसां जो मैं चढ़ांदा, सुख सुहाग देणे आला

कुंकुंम काम दं दिव्यं कुंकुंम काम रूपिणम्
अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुंम प्रतिगृह्यताम्।

कामनियों को दिव्य उत्तम, कान्ति प्रदान करने वाला
करता हूं समर्पित कुंकुंम, सुख सौभाग्य देने वाला

आभूषण

ताकत शोभा बधाणे आला, छलैपे जो एह बधाए
गेहणा तुसां जो मैं चढ़ांदा, सुख समृद्धि भी एह ल्याए

रक्त कंकणर्वेदूर्य मुक्ताहारादिकानिच,
सुप्रसन्नेन मनसादत्तानि स्वीकुरूष्व भोः।

शोभा शक्ति बढ़ाने वाला, सुन्दरता का करता वृद्धि
आभूषण अर्पित करता हूं, प्रदान करे सुख समृद्धि

सिंदूर

लाल पीले रंगे ने मिलया, सूरजेरिया लालिया साईं
चिकना चमत्कारी सुहागे आला, लगाई लेन्यो मेरी माई

सिंदूर रक्तवर्णां च सिंदूर तिलक प्रिये,
भक्तया दत्त मया देवि सिंदूर प्रतिगृह्यताम्

सिंदूर पीले रंग से मिला, अरूण वर्ण के है समान
स्निग्ध चमत्कृत सौभाग्यवर्द्धक, स्वीकार करो मंगल महान्

कज्जल

कपूरे री ज्योतिया ने बणया, नेत्रां जो ज्योतिदिंदा है
नोखा बद्धिया एह ज्योति कज्जल, ला हाखी च खरा लगदा

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्ति कारकम,
कर्पूर ज्योति समुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।

कर्पूर मिश्रित ज्योति से, नेत्रों को दृष्टि प्रदान करें
दिव्य उत्तम यह कज्जल, मां भगवती धारण करे

सौभाग्य सूत्र

सोने रत्नां मणियां बणाया, सुहागे रा एह सूतर बणया
गले री शोभा जो बधांदा, श्रद्धा भावेरे धागयां तणया

सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्ण मणि संयुतम,
कंठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि में सदा।

स्वर्ण मणिरत्नों से, सौभाग्य सूत्र यह निर्मित
शोभा कंठ बढ़ाने हेतु, करता हूं मां तुझको अर्पित

परिमल द्रव्य

अगर कपूर कस्तूरी चन्नण, कुगूंए ने भी है बणाया
स्वीकारना मां सुगन्धिया आला, लेप अंगां च एह लगाया।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्
नाना परिमल द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि

अगर कपूर कस्तूरी चंदन, कुंकम से निर्माण किया
स्वीकार करो मां परिमल, अंगों पर है लेप किया

अक्षत

धरती माता दे पेटे ते, समृद्धि देणे आला अन्न
कुंगूए ने एह रंगयो अच्छत्, भरी देणा घरे अन धन

अक्ष ताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमात्काः सुशोभिताः
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि

पृथ्वी माता के गर्भ से, समृद्धि युक्त देवान्न
कुंकुम रंजित अर्पित अक्षत, भर दो घर धन धान्य

पुष्प

पारिजातरिया सुगंधिया लेई, कमल वेला चम्पा फुल्ल
सेवा तुसां रिया च अर्पित, ऋता मुताबक छैल अनमुल्ल

माल्यादीनि सुगन्धीनि माला त्यादीनि भक्तितः
माया ह्रतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्

पारिजात की गंध ले, कमल वैला चम्पा फूल
सेवा में पुष्प अर्पित हैं सुन्दर ऋतु अनुकूल

फूल माला

सुदर सूतरे च पिरोई करी, फुल्ल सुगन्धिया ने भरयो
गुंदियो माला रंग बिरंगी, मां तेरे गले मुताबक है बणियो

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालात्यादीनि वैप्रभो
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्

सुन्दर सूत्र में पिरोकर गन्ध युक्त हैं नाना फूल
गूंथी माला रंग बिरंगी, मां तेरे कंठ अनुकूल

बिल्व पत्र

अखंडित तिन पतराँ आला, एह करदा है पापां रा नाश
बिल पत्रिया चढा़ंदा है मां ! इस च लछमिया रा है वास

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्
त्रिजन्म पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्

अखण्डित तीन पत्रों वाला , यह करता है पापों का नाश
बिल्व चढ़ाता मां मैं, पवित्र लक्ष्मी का है वास

इतर

केसर पारिजाते रिया मुश्का लेई, इतर फुलैल है बणाया
सेवा तुसां रिया च एह अर्पित, सुगन्धित करें तुसांरी काया

दिव्य गन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्
गन्ध द्रव्य मिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।

केशर पारिजात की गन्ध लेकर, इतर फुलेल है बनाया
सेवा में समर्पित सुगंन्धित कर दे मां की काया

धूप

पर्वतां रियां जड़ी बूटियां लेई, नक्ख न्हाणिएं आला धूप
चन्नण गुग्गल बिच मलाई, सारें सुगन्धि करें भरपूर

वनस्पति रसद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः
आध्रेयः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्

पर्वत की जड़ी बूटियों से, अग्नि शिखर से निर्मित धूप
चन्दन गुग्गल को मिलाकर, सुगन्धित स्वीकारे हैं अनूप

दीप

एह दीया बड़ा ही शोभा आला, न्हेरे जो है दूर नस्हांदा
एह धीऊए रूँए ने है बलया, तुसांरिया शोभा जो बधांदा

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वहिन्ना योजित मया
दीपं गृहाण देवशि त्रैलोक्य तिमिरा पहम्

यह दीपक परमशोभा बाला, अंधकार को दूर भगाता
घृत रूई से प्रज्जवलित अर्पित, तेरी शोभा को बढ़ाता

नैवेद्य

हलुआ लड्डू पेड़ा पूरी, खरा पकाया मिठा अन्न
भोग लगा तुसां ग्रहण करामां, व्यंजना आला एह सिद्धान्न

शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च
आहारर्क भक्ष्य भोज्य नैवेद्य प्रतिगृह्यताम्

हलवा लड्डू पेड़ा पूरी, आमन्न सिद्ध है मिष्ठान्न
भोग लगाओ ग्रहण करो मां, व्यंजन युक्त है सिद्धान्न

ऋतु फल

ऋत्ता मुताबक है लेया, सेब केला अम्ब अनार
जन्मान्तरां रे शुभ कम्मे ताईं, फल देना करना स्वीकार

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव
तेन मे सफलतावाप्तिभवेज्जन्मनि जन्मनि

केला आम संगतरा सेव, बादाम नार लिये हैं हाथ
जन्मान्तर के शुभ कार्यों में, स्वीकार करो फल देना साथ

आचमन

भोजन पचणे चहैसमर्थ, एह पवित्र जल शुद्ध शीतल
मुंह हत्थां धोणे ताईं माता, अर्पित तुसां जो एह जल

भोजन पचने में है समर्थ, पवित्र शुद्ध जल शीतल
मुख हाथ धाने के लिए, अर्पित मां को यह जल

अखंड फल

उत्तम श्री फल नरेल सुपारी, मैं तुसां जो करदा हां अर्पित
शुभ कामना रा फल देणा, सुख समृद्धिया ताईं एह समर्पित

उत्तम श्री फल नारिकेल, समर्पित करता हूं तुझको
शुभकामनाओं का फल देना, सुख शान्ति समृद्धि मुझको

ताम्बूल

लौंग सुपारी कत्था चूना, इलायचिया वासा ने भरया
भोजन पचणे ताईं दिंदा, मल्हठिया गुलकन्दे ने लगया

पुंगी फलं महद्दिव्यं नाग वल्ली दलैर्युतम्
एला लवगं संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्

सुपारी कत्था चूना लवंग, है इलायची से पूरण
भोजन पचाने को तुझको, देता पान भरा चूरण

दक्षिणा

पूजारे रे विधाने च, जे रही गई कोई कसर बाकी
अर्पित तिस ताईं एह दक्षिणा, त्रुटिया ताईं देणी माफी

दक्षिणां हेमसहितां यथाशक्ति समर्पितम्
अनन्त फलदामेनां गृहाण परमेश्वरि

इस पूजन विधान में, रह गई हैं जो कमियां
अर्पित उसके लिए दक्षिणा, पूरी करनी मेरी त्रुटियां

दण्डवत् प्रणाम

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

उल्टा लेट कर प्रणाम करता, चरणों में मैं दण्डवत्
कुटुम्ब परिवार की रक्षा करनी, मैं तेरे आगे नतमस्तक

क्षमा प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु में

सम्पूर्ण जग की हे माता ! शरणागत की रक्षा करनी
विश्वेश्वरी तू जगद्धीश्वरी, समस्त जगत् की रक्षा करती

शय्या

चतुर कलाकारां बणाई, रेसमी बिछौणेयां है सजाई
बासा भरयो फुल्ल बछाए, सेई जा अम्मा सेज लगाई

कदली गर्भसंभूतं कर्पर च प्रदीपितम्
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदाभवव

चतुर कलाकारों से निर्मत, दुकूला वेष्टित आच्छादित
सुगन्धित पुष्प बिछाए हैं मां, शय्या तुझ को यह अर्पित

आरती करें

कपूर और घुत ज्योतियों को घुमावें
दुर्गा के चरणों में चार बार, नाभि की दो बार, मुख की तीन बार घुमा कर करें – पानी दे कर निवेदन करें – हाथ धो लें।
शंख में जल भरें–भर कर शंख आरती भी उसी प्रकार से करें। भगवती के दायें बायें शंख का पानी छिड़कें। पुनः भक्तों पर जल शेष छिड़कें
कदली गर्भ संभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्,आरार्तिक्य महांकुर्वे पश्यमां वरदाभव

पुष्पांजलि

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्द प्रेम्णा समर्पितः
मन्त्र पुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्

नाना प्रकार के ये पुष्प, कर में लिये हैं सुकुमार
पुष्पाक्षत से भरी अंजलि, मां कर लेनी स्वीकार

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पानि जन्मान्तर कृताति च
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे

जो अन्जाने में हुए पाप हैं, परिक्रमा उन के लिए करता हूं।
अनुग्रह करना हे माता। प्रणाम दण्डवत् करता हूं।

Imperial Printing Press, Dharamsala (Ph. 22390)